1967 Panch Parmeshti Prayers

Panch Parmeshti Stavan (In Divya Dhvani, 1967)

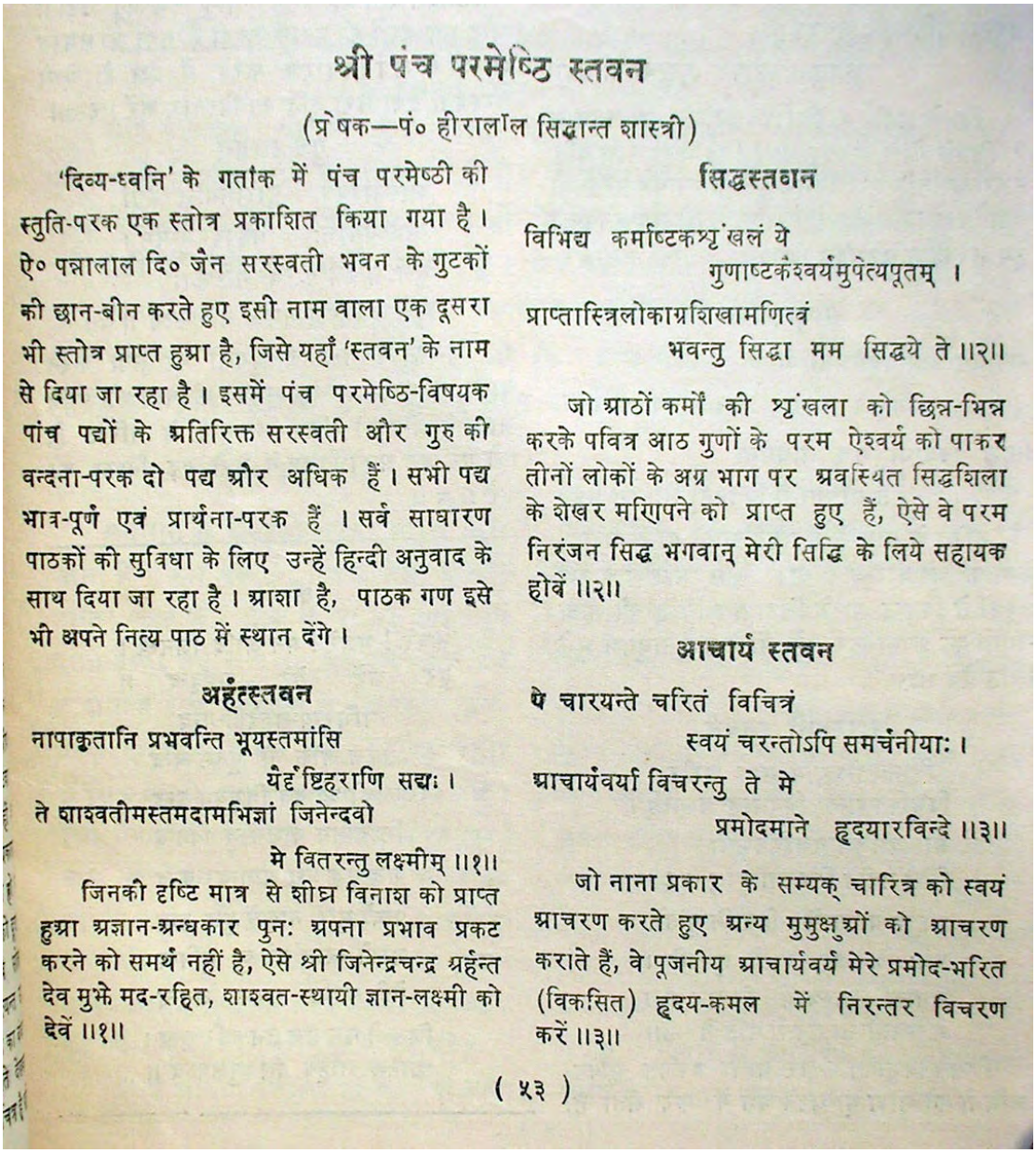

श्री पंच परमेष्ठि स्तवन

(प्रेषक—पं० हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री)

'दिव्य-ध्वनि' के गतांक में पंच परमेष्ठी की स्तुति-परक एक स्तोत्र प्रकाशित किया गया है। ऐ० पन्नालाल दि० जैन सरस्वती भवन के गुटकों की छान-बीन करते हुए इसी नाम वाला एक दूसरा भी स्तोत्र प्राप्त हुआ है, जिसे यहाँ 'स्तवन' के नाम से दिया जा रहा है। इसमें पंच परमेष्ठि-विषयक पांच पद्यों के अतिरिक्त सरस्वती और गुरु की वन्दना-परक दो पद्य और अधिक हैं। सभी पद्य भाव-पूर्ण एवं प्रार्थना-परक हैं। सर्व साधारण पाठकों की सुविधा के लिए उन्हें हिन्दी अनुवाद के साथ दिया जा रहा है। आशा है, पाठक गण इसे भी अपने नित्य पाठ में स्थान देंगे।

अर्हत्स्तवन

नापाकृतानि प्रभवन्ति भूयस्तमांसि
यैर्दृष्टिहराणि सद्यः।
ते शाश्वतीमस्तमदामभिज्ञां जिनेन्दवो
मे वितरन्तु लक्ष्मीम् ॥१॥

जिनकी दृष्टि मात्र से शीघ्र विनाश को प्राप्त हुआ अज्ञान-अन्धकार पुनः अपना प्रभाव प्रकट करने को समर्थ नहीं है, ऐसे श्री जिनेन्द्रचन्द्र अर्हन्त देव मुझे मद-रहित, शाश्वत-स्थायी ज्ञान-लक्ष्मी को देवें ॥१॥

सिद्धस्तवन

विभिद्य कर्माष्टकशृंखलं ये
गुणाष्टकैश्वर्यमुपेत्यपूतम्।
प्राप्तास्त्रिलोकाग्रशिखामणित्वं
भवन्तु सिद्धा मम सिद्धये ते ॥२॥

जो आठों कर्मों की शृंखला को छिन्न-भिन्न करके पवित्र आठ गुणों के परम ऐश्वर्य को पाकर तीनों लोकों के अग्र भाग पर अवस्थित सिद्धशिला के शेखर मणिपने को प्राप्त हुए हैं, ऐसे वे परम निरंजन सिद्ध भगवान् मेरी सिद्धि के लिये सहायक होवें ॥२॥

आचार्य स्तवन

ये चारयन्ते चरितं विचित्रं
स्वयं चरन्तोऽपि समर्चनीयाः।
आचार्यवर्या विचरन्तु ते मे
प्रमोदमाने हृदयारविन्दे ॥३॥

जो नाना प्रकार के सम्यक् चारित्र को स्वयं आचरण करते हुए अन्य मुमुक्षुओं को आचरण कराते हैं, वे पूजनीय आचार्यवर्य मेरे प्रमोद-भरित (विकसित) हृदय-कमल में निरन्तर विचरण करें ॥३॥

उपाध्याय स्तवन

येषां तपः श्रीरनघा शरीरे
विवेचिका चेतसि तत्त्व बुद्धिः ।
सरस्वती तिष्ठति वक्त्रपद्मे
पुनन्तु तेऽध्यापक पुङ्गवा नः ॥४॥

जिनके शरीर में निर्दोष तपःश्री शोभायमान है, जिनके चित्त में सद्-असद्-विवेचिका तत्त्व बुद्धि स्फुरायमान है और जिनके मुख-कमल पर सरस्वती देवी विराजमान है, ऐसे श्रेष्ठ उपाध्याय परमेष्ठी हम सबको पवित्र करें ॥४॥

साधु स्तवन

कषायसेनां प्रतिबन्धिनीं ये
निहत्य धीराः शम शीलशस्त्रैः ।
सिद्धि विबाधां लघु साधयन्ते
ते साधवो मे वितरन्तु सिद्धिम् ॥५॥

मुक्ति के मार्ग में रुकावट डालने वाली कषाय-सेना को जो धीर-वीर अपने शम और शील रूप शस्त्रों से विनष्ट करके निराबाध सिद्धि को शीघ्र साधने का प्रयत्न कर रहे हैं. वे सर्व साधुगण मुझे सिद्धि देवें ॥५॥

सरस्वती स्तवन

विभूषितोऽह्लाय यया शरीरे,
विमुक्तिकान्तां विदधातु वश्याम् ।
सा दर्शनज्ञानचरित्रभूषा
चित्ते मदीये स्थिरतामुपैतु ॥ ६ ॥
मातेव या शास्ति हितानि पुंसो,
रजः क्षिपन्ती ददती सुखानि ।
समस्त शास्त्रार्थ विचार दक्षा
सरस्वती सा तनुतां मतिं मे ॥७॥

जिससे विभूषित शरीर वाला व्यक्ति मुक्ति-कामिनी को शीघ्र ही अपने वश में कर लेता है, ऐसी वह सम्यग्दर्शन, ज्ञान और चरित्ररूप आभूषण वाली सरस्वती देवी मेरे चित्त में स्थिरता को प्राप्त हो। जो माता के समान मनुष्य को उसके हितों का उपदेश देती है, उसको पाप रज को उड़ाती और सर्व सुखों को प्रदान करती है, तथा जो समस्त शास्त्रों के अर्थ-विचारण करने में दक्ष हैं, ऐसी सरस्वती देवी मेरी बुद्धि का विस्तार करें ॥६-७॥

गुरु स्तवन

शास्त्राम्बुधेः पारमियर्त्ति येषां
निषेव्यमाणः पदपद्मयुग्मम् ।
गुणैः पवित्रै गुरवो गरिष्ठाः
कुर्वन्तु निष्ठां मम ते वरिष्ठाम ॥ ८॥

जिनके चरण-कमल युगलों की सेवा करने वाला मनुष्य शास्त्र रूप समुद्र के पार को पहुँच जाता है और जो पवित्र श्रेष्ठ गुणों से गरिष्ठ हैं, ऐसे गुरु जन अपने विषय में मेरी दृढ़ निष्ठा को करें ॥ ८ ॥

कीर्तन

भजरे ! भजरे ! मन आदि जिनन्द ।
दूर करें तेरे अघवृन्द ॥
नाभिराय-मरुदेवी-नन्द
सकल लोक में पूनम चन्द
जाको ध्यावत त्रिभुवन इन्द
मिथ्यातम नाशन जु दिनन्द
शुद्ध बुद्ध प्रभु आनन्द कन्द
पायो सुख, नास्यों दुख द्वन्द
जाको ध्यान धरे जु मुनिन्द
तेई पावत परम अनन्द
जिनको मन बच तन करि वृन्द ।
'द्यानत' लहिये शिवसुखकन्द ॥

From **Stotr, Mantr and Yantr Sankalan** manuscript (available on this site)

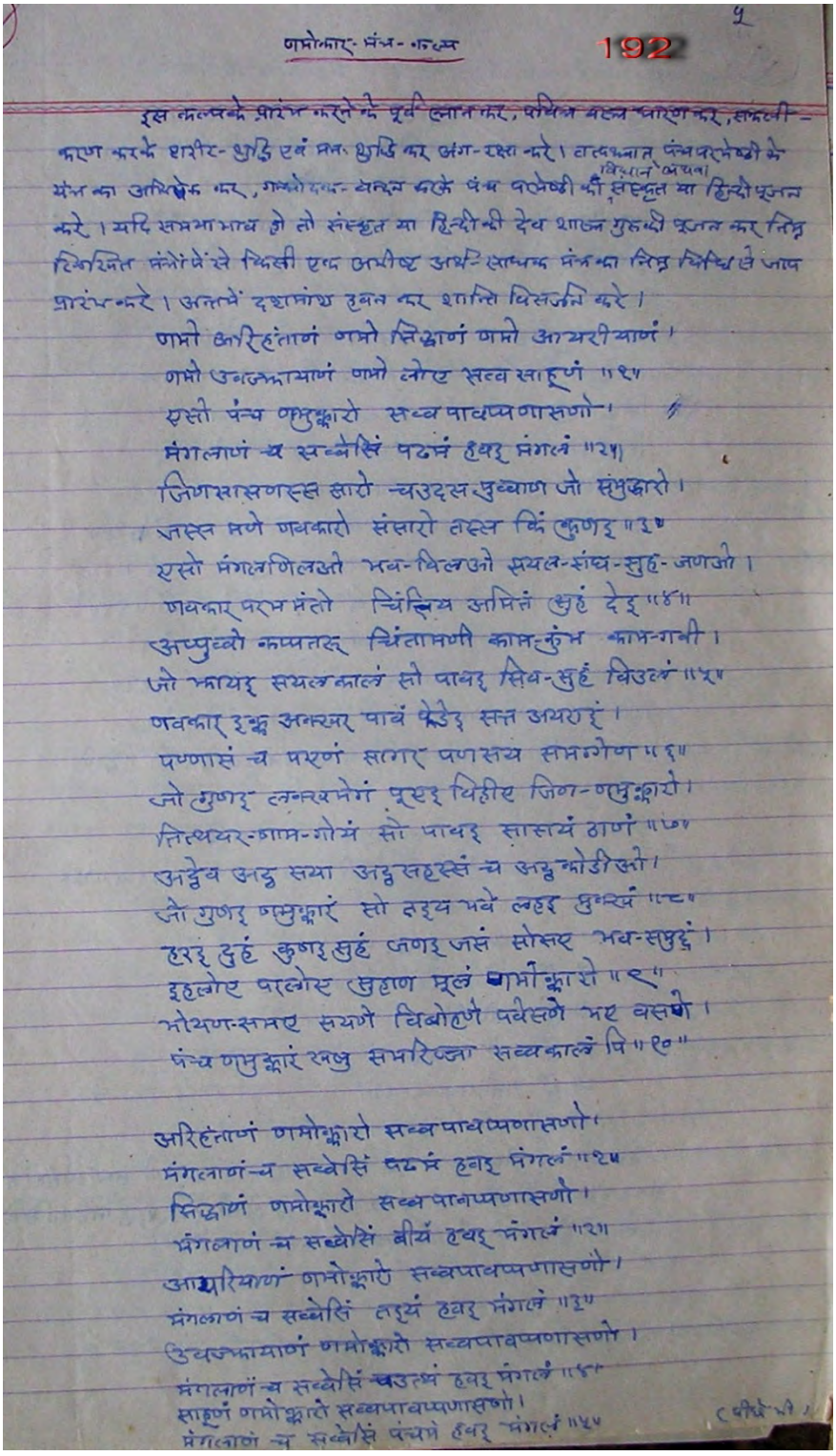

णमोकार-मंत्र-कल्प

इस कल्पके प्रारंभ करनेके पूर्व स्नान कर, पवित्र वस्त्र धारण कर, सकलीकरण करके शरीर-शुद्धि एवं मनः शुद्धि कर अंग-रक्षा करे। तत्पश्चात पंचपरमेष्ठी के मंत्र का अभिषेक कर, गन्धोदक-वन्दन करके पंच परमेष्ठी की संस्कृत या हिन्दी पूजन (विधान अथवा) करे। यदि समभाव हो तो संस्कृत या हिन्दीकी देव शास्त्र गुरुकी पूजन कर निम्न लिखित मंत्रोंमें से किसी एक अभीष्ट अर्थ-साधक मंत्र का निम्न विधि से जाप प्रारंभ करे। अन्तमें दशांश हवन कर शान्ति विसर्जन करे।

णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरीयाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं ॥१॥
एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥२॥
जिणसासणस्स सारो चउदस पुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे णवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥३॥
एसो मंगलणिलओ भव-विलओ सयल-संघ-सुह-जणओ।
णवकार परम मंतो चिंतिय अमितं सुहं देइ ॥४॥
अप्पुव्वो कप्पतरू चिंतामणी काम-कुंभ काम-गवी।
जो झायइ सयल कालं सो पावइ सिव-सुहं विउलं ॥५॥
णवकार इक्क अक्खर पावं फेडेइ सत्त अयराइं।
पण्णासं च पयणं सागर पणसय समग्गेण ॥६॥
जो गुणइ लक्खमेगं पूएइ विहीए जिण-णमुक्कारो।
तित्थयर-णाम-गोयं सो पावइ सासयं ठाणं ॥७॥
अट्ठेव अट्ठ सया अट्ठ सहस्सं च अट्ठ कोडीओ।
जो गुणइ णमुक्कारं सो तइय भवे लहइ मुक्खं ॥८॥
हरइ दुहं कुणइ सुहं जणइ जसं सोसए भव-समुद्दं।
इहलोए परलोए सुहाण मूलं णमोक्कारो ॥९॥
भोयण-समए सयणे विबोहणे पवेसणे भए वसणे।
पंच णमुक्कारं खलु समरिज्जा सव्वकालं पि ॥१०॥

अरिहंताणं णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥१॥
सिद्धाणं णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं बीयं हवइ मंगलं ॥२॥
आयरियाणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं तइयं हवइ मंगलं ॥३॥
उवज्झायाणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं चउत्थं हवइ मंगलं ॥४॥
साहूणं णमोक्कारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पंचमं हवइ मंगलं ॥५॥

(पीछे भी [illegible])

एसो पंच णमोक्कारो सव्व पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥६॥

णासेइ चोर सावय विस-हर जल-जलण-बंधण-भयाइं ।
चिंतिज्जंतो रक्खस-रण-राय-भयाइं भावेण ॥७॥

अरिहंता मुज्झ मंगलं अरिहंता मुज्झ देवयं ।
अरिहंते त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥८॥
सिद्धा मुज्झ मंगलं सिद्धा मुज्झ देवयं ।
सिद्धे त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥९॥
आयरिया मुज्झ मंगलं आयरिया मुज्झ देवयं ।
आयरिया त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१०॥
उवज्झाया मुज्झ मंगलं उवज्झाया मुज्झ देवयं ।
उवज्झाया त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥११॥
सव्वसाहू मुज्झ मंगलं सव्वसाहू मुज्झ देवयं ।
सव्वसाहू कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१२॥
एसो पंच मुज्झ मंगलं एसो पंच मुज्झ देवयं ।
एसो पंच त्ति कित्तइस्सामि वोसरामि त्ति पावगं ॥१३॥

णमिऊण असुर-सुर-गरुल-भुयंग-परिवंदियं ।
गयकिलेसे अरिहे सिद्धा आयरियं उवज्झाय सव्वसाहू य ॥१४॥

आत्मशुद्धि-मंत्र

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ।
ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं ।
ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ।
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

इस मंत्रका निष्काम भावसे १००८ बार जाप करनेसे सभी सांसारिक ~~सब~~ संकट दूर होते हैं और परमार्थकी भी सिद्धि होती है। शुद्ध पारमार्थिक दृष्टि से तो ॐ ह्रीं लगाने की भी आवश्यकता नहीं है।